फरीदाबाद
मजदूर समाचार
राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया
नई सीरीज नम्बर 222 — दिसम्बर 2006

प्रगति-विकास

फोन, कम्प्युटर, उपग्रह, इन्टरनेट, कैमरे सेना, पुलिस और खुफिया विभागों की विश्व में हर स्थान पर हर समय जकड़ बढा रहे हैं। छोटे-से इंग्लैण्ड में लोगों पर चौबीसों घण्टे नजर रखने के लिये चालीस लाख कैमरे लगे हैं......

आप-हम क्या-क्या करते हैं... (13)

अपने स्वयं की चर्चायें कम की जाती हैं। खुद की जो बातें की जाती हैं वो भी अक्सर हाँकने-फाँकने वाली होती हैं, स्वयं को इक्कीस और अपने जैसों को उन्नीस दिखाने वाली होती हैं। या फिर, अपने बारे में हम उन बातों को करते हैं जो हमें जीवन में घटनायें लगती हैं — जब-तब हुई अथवा होने वाली बातें। अपने खुद के सामान्य दैनिक जीवन की चर्चायें बहुत-ही कम की जाती हैं। ऐसा क्यों है? ★ सहज-सामान्य को ओझल करना और असामान्य को उभारना ऊँच-नीच वाली समाज व्यवस्थाओं के आधार-स्तम्भों में लगता है। घटनायें और घटनाओं की रचना सिर-माथों पर बैठों की जीवनक्रिया है। विगत में भाण्ड-भाट-चारण-कलाकार लोग प्रभुओं के माफिक रंग-रोगन से सामान्य को असामान्य प्रस्तुत करते थे। छुटपुट घटनाओं को महाघटनाओं में बदल कर अमर कृतियों के स्वप्न देखे जाते थे। आज घटना-उद्योग के इर्दगिर्द विभिन्न कोटियों के विशेषज्ञों की कतारें लगी हैं। सिर-माथों वाले पिरामिडों के ताने-बाने का प्रभाव है और यह एक कारण है कि हम स्वयं के बारे में भी घटना-रूपी बातें करते हैं। ★ बातों के सतही, छिछली होने का कारण ऊँच-नीच वाली समाज व्यवस्था में व्यक्ति की स्थिति गौण होना लगता है। वर्तमान समाज में व्यक्ति इस कदर गौण हो गई है कि व्यक्ति का होना अथवा नहीं होना बराबर जैसा लगने लगा है। खुद को तीसमारखाँ प्रस्तुत करने, दूसरे को उन्नीस दिखाने की महामारी का यह एक कारण लगता है। ★ और, अपना सामान्य दैनिक जीवन हमें आमतौर पर इतना नीरस लगता है कि इसकी चर्चा स्वयं को ही अरुचिकर लगती है। सुनने वालों के लिये अक्सर "नया कुछ" नहीं होता इन बातों में। ★ हमें लगता है कि अपने-अपने सामान्य दैनिक जीवन को "अनदेखा करने की आदत" के पार जा कर हम देखना शुरू करेंगे तो बोझिल-उबाऊ-नीरस के दर्शन तो हमें होंगे ही, लेकिन यह ऊँच-नीच के स्तम्भों के रंग-रोगन को भी नोच देगा। तथा, अपने सामान्य दैनिक जीवन की चर्चा और अन्यों के सामान्य दैनिक जीवन की बातें सुनना सिर-माथों से बने स्तम्भों को डगमग कर देंगे। ★ कपड़े बदलने के क्षणों में भी हमारे मन-मस्तिष्क में अक्सर कितना-कुछ होता है! लेकिन यहाँ हम बहुत-ही खुरदरे ढँग से आरम्भ कर पा रहे हैं। मित्रों के सामान्य दैनिक जीवन की झलक जारी है।

25 वर्षीय नवयुवक : *दो वर्ष पूर्व उठते ही सुबह 6 बजे दुकान का शटर उठा कर झाड़ू लगाता था। अब 7 बजे उठता हूँ, तरोताजा होता हूँ, चाय बनाता हूँ और फिर दुकान का शटर उठाता हूँ। चर्चाओं-अध्ययन-मनन से समझ में आया है कि जो समाज व्यवस्था है उसको बदले बिना किसी का भी जीवन बेहतर नहीं हो सकता। यह तथ्य है कि जीविका इस समय दुकान से ही चल रही है पर मैं मानता हूँ कि दुकान चलाना ही मेरी जिन्दगी नहीं है। दुकान चला कर पैसा कमाना अब मेरा शौक नहीं बल्कि मेरी मजबूरी है....*

जन्म किराये के कमरे में हुआ पर मेरी यादों में झुग्गियाँ ही हैं। माता-पिता की पहली सन्तान हूँ और मुझे बहुत प्यार मिला, कुछ ज्यादा ही लाड-दुलार मिला। तीस वर्ष पहले फरीदाबाद आये पिता जी मैट्रिक थे और यहाँ सी.पी.आई.-एटक यूनियन से जुड़े थे। झुग्गी में मार्क्स-लेनिन-नागार्जुन-कैफी आजमी की किताबें, लोगों का आना-जाना और चर्चायें तथा पिता जी का मेरे साथ खेलना, घूमना, खाना-पीना, पढना-पढना मेरे मन पर गहरे में अंकित हैं। पापा की हार्दिक इच्छा व प्रयास थे कि जो अभाव, पीड़ा, कुण्ठा उन्होंने झेले वे मुझ से दूर ही रहें... पाँच वर्ष का हुआ तब झुग्गियों में एक प्रायवेट स्कूल में दाखिला — हैडमास्टर पिता जी का सम्मान करता था, विद्यालय में मेरे साथ विशेष व्यवहार हुआ। मेरे मन में 7-8 वर्ष आयु तक की सुखद यादें ही हैं।

बहन-भाई हुये, परिवार के खर्चे बढे, कमाई कम हुई। पिता जी का सी.पी.आई. से मोहभंग होने लगा। मम्मी-पापा में छोटी-छोटी बातों पर विवाद होने लगे — अनबन और मारपीट। मुझ पर इस सब का बहुत प्रभाव पड़ा। मम्मी-पापा का मैं प्यारा बेटा ही रहा पर यहाँ से मेरी निजी पीड़ा शुरू हुई..... मम्मी-पापा को मैं कुछ कह नहीं पाता था। अब मैं उनका दोष नहीं देखता — सामाजिक प्रक्रिया का प्रभाव था।

दुकान पर अखबार पढते हुये ग्राहकों को निपटाता हूँ। कुछ फुर्सत होने पर 9 बजे आराम से झाड़ू लगाता हूँ। फिर जूठे बर्तन धोना....

तीसरी कक्षा में था तब मम्मी के साथ बिहार में अपने गाँव गया। वहाँ 7-8 महीने रहा। मेरे ज्यादा घूमने की थोड़ी शिकायत तथा नदी में डूब जाने का डर मम्मी को था और फिर 'गाँव में अच्छी पढाई नहीं होती' की बातें। मुझे पिता जी के पास वापस फरीदाबाद भेज दिया। यहाँ पिता जी की नौकरी छूट गई थी और वे रेहड़ी लगाने लगे थे। पापा सुबह 4 बजे उठते, झुग्गी में ही छोले, सब्जी, समोसों का आलू-मसाला तैयार करते। पूरी और समोसे रेहड़ी पर तलते थे। तेल से जलना, चाकू से हाथ कटना, ग्राहकों की बदतमीजी/दादागिरी — एक ने पैसे देने से इनकार कर चाकू निकाल लिया था। रविवार को स्टील स्टॉकयार्ड बन्द रहता था और पिता जी हफ्ते-भर का सामान बाजार से लाते थे। संजय कॉलोनी में एक प्रायवेट स्कूल में तीसरी में ही मेरा दाखिला हुआ।

पड़ोस के बच्चे झुग्गियों वाले स्कूल में ही जाते थे। मुझे अकेले जाना पड़ता। बहन, भाई, माँ बहुत याद आते। हम सब मिल कर क्यों नहीं रह रहे? सुबह मैं बस्ता ले कर स्कूल के लिये निकलता और पिता जी रेहड़ी ले कर। तय था कि मैं स्कूल के बाद रेहड़ी पर पहुँचूँ। मैं स्कूल नहीं जाता था, इधर-उधर घूमता था और छुट्टी के समय रेहड़ी पर पहुँच जाता। वहाँ काम में हाथ बँटाना मुझे अखरता — सारे बच्चे खेल-घूम रहे हैं और मैं बँधा पड़ा हूँ। बचपन जो छिन रहा था यह अखरता था।

मेरी शैतानियाँ उजागर हुई। गाँव में नदी का डर था और यहाँ झुग्गियों की बगल में रेल का। एक चाय वाले की सलाह पर पिताजी ने मुझे गदपुरी के गुरुकुल में डाल दिया...

गुरुकुल

गुरुकुल आर्य समाज के दायरे में चलता था। प्यार-दुलार मा के बराबर और अनुशासन हद से ज्यादा कठोर। बात अच्छी या खराब की नहीं बल्कि खास बात यह कि सब कुछ जबरदस्ती। पहली से दसवीं तक के लड़के थे और मुझे तीसरी कक्षा में प्रवेश दिया गया।

सुबह 4 बजे उठने की घण्टी पर बाहर एकत्र हो कर मंत्रोच्चार और फिर शौच के लिये जाना। कोई सोता रह गया तो डण्डा। व्यायाम की घण्टी 4½ बजे — आसन, प्राणायाम, कसरत। स्नान, और नहीं नहाने की शिकायत पर डण्डा। फिर प्रार्थना-हवन। मंत्रों का सही उच्चारण नहीं करने, झपकी आने **(बाकी पेज चार पर)**

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद-121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

दर्पण में चेहरा-दर-चेहरा

चेहरे डरावने हैं.... आईना ही नहीं देखें या फिर हालात बदलने के प्रयास करें?

बिड़ला वी एक्स एल मजदूर : "14/5 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में हम कैजुअल वरकरों से रोज जबरन 16 घण्टे काम करवाते हैं। इतना रोकने पर कम्पनी भोजन के पैसे भी नहीं देती। किसी कारण 10-12 घण्टे ड्युटी के बाद कोई वरकर फैक्ट्री से चला गया तो उसे 8 घण्टे के ही पैसे देते हैं। और कम्पनी ने हमें अगस्त, सितम्बर, तथा अक्टूबर के ओवर टाइम का भुगतान आज 20 नवम्बर तक नहीं किया है। ओवर टाइम के पैसे डबल की बजाय सिंगल रेट से देते हैं।"

सुपर ऑटो वरकर : "प्लॉट 84 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में काम करते 500 मजदूरों में 50-60 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। फैक्ट्री में शीट मैटल का काम है, पावर प्रेस हैं और मजदूरों के हाथ कटते रहते हैं। कम्पनी कुछ फार्म भरवा कर रखती है और एक्सीडेन्ट में हाथ कटने पर वरकर की ई.एस.आई. करवा देती है। जिनकी ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं उनमें 7-8 के हाथ कटे हैं। इधर इस माह में ही एक मजदूर की दो उँगली कटी हैं और दूसरे की एक उँगली। कम्पनी ने स्वयं 25 मजदूर रखे हैं, दुर्गा इन्टरप्राइज के जरिये 100 रखे हैं और बाकी सब को कम्पनी ने कुछ स्थाई मजदूरों पर ठेकेदार का बिल्ला लगा कर उनके जरिये रखा है। पेन्ट शॉप, यामाहा लाइन, होण्डा लाइन, महिन्द्रा लाइन में वरकर ठेकेदारों के जरिये रखे हैं जिनमें हैल्परों को 12 घण्टे रोज पर 30 दिन के 3000 रुपये देते हैं। बारह घण्टे में एक कप चाय तक नहीं देते। फैक्ट्री में कैन्टीन नहीं है और भोजन बाहर सड़क पर करना पड़ता है। हर महीने कम्पनी कागजात जलाती है। सैक्टर-6 में ही कम्पनी की प्लॉट 13, 50, 79, 80 में भी फैक्ट्रियाँ हैं।"

हाई पोलीमर लैब वरकर : "प्लॉट 8 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में काम करते 500 मजदूरों में से 155 स्थाई हैं और बाकी को 6 ठेकेदारों के जरिये रखा है। ड्युटी के बाद रोकते हैं तो 8 घण्टे रोकते हैं और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। फैक्ट्री में काम का भारी दबाव है और बात-बात पर कम्पनी ठेकेदार के जरिये रखों को निकाल देती है तथा स्थाई को निलम्बित कर देती है। डेढ वर्ष में 10-12 स्थाई मजदूरों को नौकरी से निकाल भी दिया है।"

वी एक्स एल टैक्नोलोजीज मजदूर : "20/2 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में कैजुअल वरकरों को 2003 और 04 का बोनस दिया ही नहीं। 'मजदूर पैसे लेने आया नहीं' लिख कर उस पैसे को वैलफेयर खाते में डाल कर अधिकारी हड़प लेते हैं। जबकि, नौकरी से निकाल दिये जाने के बाद कैजुअल वरकर बोनस राशि के लिये फैक्ट्री गेट पर आते हैं और कई बार टरका दिये जाने पर थक-हार कर आना बन्द करते हैं। इधर हम कैजुअल वरकरों ने शिकायतों की धमकी दी तो कम्पनी ने हमें 6 महीने के लिये 550 रुपये बोनस में दिये हैं। कानून अनुसार घाटे वाली कम्पनी द्वारा भी वर्ष में 8.33 प्रतिशत बोनस देना अनिवार्य है। वी एक्स एल टैक्नोलोजीज मुनाफा दिखाती है.... हमें 8.33 प्रतिशत बोनस भी सरकार द्वारा निर्धारित हैल्पर के न्यूनतम वेतन पर 6 महीने का 1250 रुपये बनता है।"

बॉकमैन वरकर : "प्लॉट 10 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 40 मजदूर काम करते हैं पर ई.एस.आई. व पी.एफ. 5-7 की ही हैं और ई.एस.आई. कार्ड तो एक को भी नहीं दिया है। हैल्परों की तनखा 1800 रुपये। कार्य के दौरान चोट लगने पर मजदूर को घर भेज देते हैं, 'जब ठीक हो जाओ तब काम पर आ जाना'..... एतराज करने वाले को 20-30 रुपये पट्टी के लिये दे देते हैं। फैक्ट्री का प्रोडक्शन मैनेजर ही ठेकेदार है और हर वर्ष प्रोडक्शन मैनेजर उर्फ ठेकेदार दिवाली पर मजदूरों को मिठाई का डिब्बा देता था। चर्चा रही है कि कम्पनी दिवाली पर प्रति मजदूर 250-300 रुपये व मिठाई देती है जिनमें से रुपये साहब अपनी जेब में रख लेते। इस वर्ष दिवाली की मिठाई देने के दिन प्रोडक्शन मैनेजर उर्फ ठेकेदार फैक्ट्री में आया ही नहीं। इस वर्ष साहब हम मजदूरों की मिठाई भी खा गया।"

सरवल उद्योग मजदूर : "15/1 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में अक्टूबर माह की तनखा आज 20 नम्बर तक नहीं दी है। सितम्बर और अक्टूबर के ओवर टाइम के पैसे भी आज तक नहीं दिये हैं। कहते हैं कि कम्पनी के पास पैसे नहीं हैं। फैक्ट्री में काम करते 125 मजदूरों में 100 से ज्यादा को दो ठेकेदारों के जरिये रखा है। हैल्पर ग्रेड देते हैं और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। सुपरवाइजर गाली देते हैं।"

अंग भंग हुआ मजदूर : "फैक्ट्रियों में कार्य के दौरान हाथ-पैर कटने आदि पर ई.एस.आई. से होती पेन्शन की राशि वर्षों नहीं बढाते। तीन-पाँच साल में बढाने की बजाय महँगाई अनुसार डी.ए. के साथ हर छह माह में पेन्शन क्यों नहीं बढाते? इधर हद तो यह कर रखी है कि अगस्त 05 में पेन्शन में बढाई राशि 14 महीने बाद भी, नवम्बर 06 तक ई.एस.आई. ने पात्र मजदूरों को नहीं दी है।"

अल्फा टोयो वरकर : "प्लॉट 9 एच सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में दो ठेकेदारों के जरिये रखे हम 400 के करीब मजदूर काम करते हैं। हमें अक्टूबर की तनखा आज 15 नवम्बर तक नहीं दी है और जब देंगे तब हस्ताक्षर करवायेंगे कि 7 तारीख को दी है। ऐसा हर महीने किया जा रहा है।"

ध्रुव ग्लोबल मजदूर : "14 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में अधिक उत्पादन के एवज में स्टाफ को हर महीने 1½ - 2 लाख रुपये देते हैं परन्तु मजदूरों को कुछ नहीं देते। फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। कम्पनी बोनस देती ही नहीं। फैक्ट्री में काम करते ढाई हजार के करीब मजदूरों में से आठ-नो सो की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं।"

एस.पी.एल. इन्डस्ट्रीज वरकर : "कम्पनी की फैक्ट्रियों में कम्पनी द्वारा स्वयं भर्ती किये मजदूरों को वेतन देते समय कैशियर लिफाफे से पैसे निकाल कर, गिन कर मजदूर को पकड़ा देते हैं और लिफाफे को फाड़ देते हैं। हमें पता ही नहीं चलता कि लिफाफे पर लिखा कितना था। दस दिन बाद कम्पनी पे-स्लिप देती है – ओवर टाइम व हाजिरियों में गडबड़ रहती है।"

क्लच ऑटो मजदूर : "12/4 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में अक्टूबर की तनखा आज 16 नवम्बर तक देनी शुरू नहीं की है। मैनेजमेन्ट-यूनियन तीन वर्षीय दीर्घकालीन समझौते में कहीं 30 %, कहीं 50 %, तो कहीं 70% उत्पादन बढाना निर्धारित किया गया है। काम का बोझ बढाने के बदले में जो पैसे देने थे वे कम्पनी ने सितम्बर की तनखा में नहीं दिये।"

बोनी रबड़ वरकर : "प्लॉट 9 ई सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में जबरन ओवर टाइम पर रोकते हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट की दर से भी कम पर करते हैं। साहब लोग हाजिरियों तथा ओवर टाइम के घण्टों में गड़बड़ी कर हम मजदूरों के पैसे खा जाते हैं। हैल्पर की तनखा 2200 रुपये। ई.एस.आई. की कच्ची पर्ची 8 महीने बाद देते थे पर इधर एक एक्सीडेन्ट के बाद से 3 महीने बाद देने लगे हैं।"

● हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित कम से कम तनखा अकुशल मजदूर-हैल्पर के लिये 8 घण्टे की ड्युटी और महीने में 4 छुट्टी पर जुलाई 06 से 2484 रुपये 28 पैसे है, 8 घण्टे *काम के लिये* 95 रुपये 55 पैसे।

निर्मल डाइंग मजदूर : "प्लॉट 64 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में हैल्पर को 8 घण्टे के 85 रुपये और कारीगर को 100-110 रुपये। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, साप्ताहिक छुट्टी नहीं। तनखा देरी से – 25 तारीख को जा कर।"

एम.जी. इलेक्ट्रिकल्स वरकर : "प्लॉट 97 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 1400 रुपये, ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं। अक्टूबर की तनखा आज 14 नवम्बर तक नहीं दी है।"

आर.के. फोरजिंग वरकर : "प्लॉट 25 सैक्टर-4 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 1600-1700 रुपये। ड्युटी 12 घण्टे की, ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। अक्टूबर का वेतन आज 15 नवम्बर तक नहीं दिया है। फैक्ट्री में काम करते 110 मजदूरों में कोई भी स्थाई नहीं है।"

महीने में एक बार छापते हैं, 5000 प्रतियाँ फ्री बाँटते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

आप-हम क्या-क्या करते हैं..... (पेज चार का शेष)

क्रिकेट के सामान पर खर्च की।

आठवीं में बोर्ड परीक्षा के हव्वे के कारण नवम्बर से मार्च तक पढाई की — क्रिकेट भी छूट गई। आठवीं की परीक्षा के बाद तीन महीने फिर कार्डपैक फैक्ट्री में 850 रुपये तनखा में। रेंजर साइकिल 2000 रुपये में खरीदी।

आठवीं का परिणाम बहुत अच्छा रहा। पारिवारिक सभा में पापा भावुक हो गये — पढाने के लिये सब कुछ करेंगे, प्रायवेट स्कूल में प्रवेश के लिये 5000 रुपये का प्रबन्ध करेंगे। मेरी 5 महीने की/पापा की ढाई महीने की तनखा ऐसे खर्च करना मुझे ठीक नहीं लगा। मैंने एन एच 1 के सरकारी स्कूल में दाखिला लिया.....

दुकान पर सामान की पूर्ति के लिये बड़ी मण्डी जाना खास काम बनता है। बारह बजे के करीब जाता हूँ। पहले हर रोज जाता था। काफी प्रयास कर सप्ताह में दो- तीन दिन पर आया और अब एक दिन पर आया हूँ। मुझे अपने स्वयं के लिये समय चाहिये....

नवीं कक्षा की परीक्षा के बाद छुट्टियों में फिर कार्डपैक फैक्ट्री में काम किया — 950 रुपये तनखा में। पैसे का चस्का लग गया था। दसवीं में था तब अक्टूबर में एक दिन ठेकेदार अरजेन्ट काम के लिये बुलाने आया। फिर मैंने स्वयं ही ठेकेदार से स्कूल की छुट्टी के बाद 4- 5 घण्टे का नियमित काम माँगा। दसवीं की बोर्ड की परीक्षा से 15 दिन पहले तक कार्डपैक फैक्ट्री में काम किया। धीरे- धीरे रोटरी और स्लॉट मशीनों को चलाना सीख लिया था।

सन् 2000 में दसवीं की परीक्षा के बाद गत्ते लाइन में मशीन चलाने, ज्यादा पैसों के लिये जगह ढूँढी। सैक्टर- 24 में तोशीबा पैकेजिंग को ऑपरेटर की सख्त जरूरत थी — 1700 रुपये तनखा में मुझे रख लिया। मैं हैल्पर से ऑपरेटर हो गया था। छोटे- से शेड में पूरी कम्पनी थी और सब वरकर कम्पनी ने स्वयं भर्ती किये थे। काम बहुत ज्यादा था। रोज 12 घण्टे की शिफ्ट तो थी ही, महीने में 10 दिन 16 घण्टे और 4- 5 दिन 24 घण्टे की हाजिरी लगी। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। फैक्ट्री में 30 मजदूर, किसी की भी ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं। तीन महीने मैंने 3000 रुपये प्रतिमाह से अधिक उठाये। फिर काम कम हो गया — 10 दिन बैठा कर भी पैसे दिये और फिर आने को मना कर दिया।

दसवीं का परिणाम बढिया नहीं आया। ओपन बोर्ड से 12 वीं करने का तय कर 11वीं में प्रवेश नहीं लिया। कच्ची झुग्गी को पक्की बनाया।

परिवार को परेशान करने से बचने के लिये वर्ष- भर से दुकान पर रहने के संग- संग भोजन भी बनाने लगा हूँ। डेढ- दो बजे भोजन तैयार करता हूँ और गर्मियों में शटर डाल कर 1- 1½ घण्टे सो लेता हूँ पर आजकल पढता हूँ — मुख्यतः साहित्य व मार्क्स के दर्शन से जुड़ी सामग्री.....

लाइन बदलने पर हैल्पर ही लगता इसलिये पैकेजिंग लाइन में ही रहा। सेन्चुरी पैकेजिंग, 19ए इन्डस्ट्रीयल एरिया में 1900 रुपये तनखा में रोटरी ऑपरेटर लगा। फैक्ट्री में 30 मजदूर, किसी की भी ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं। सामान्यतः 12 घण्टे ड्युटी, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। छोटी- सी फैक्ट्री में मजदूरों पर निगाह रखने के लिये 11 कैमरे। संचालक पिता- पुत्रों में पिता ज्यादा ही वरकरों के सिर पर चढा रहता..... **सेन्चुरी पैकेजिंग में एक दिन पंचिंग मशीन में मेरा दाहिना हाथ आ गया, कुचला गया।** बेहोश हालत में मुझे एस्कोर्ट्स अस्पताल ले गये। एक्सीडेन्ट रिपोर्ट कम्पनी ने नहीं भरी, ई.एस.आई. का जिक्र नहीं, एक सिपाही मेरा बयान ले गया। पन्द्रह दिन अस्पताल में भर्ती रहा और फिर साल- भर पट्टी चली।

दो महीने बाद फैक्ट्री जाने लगा। गेट पर बैठा देते। गाड़ी में अस्पताल पट्टी करवाने कम्पनी ले जाती रही। तनखा माँगी तो 500 रुपये दे दिये। फिर एक महीने बाद 500 रुपये इसी प्रकार। वकील के जरिये मामला उठाया। डेढ साल तारीख पर तारीख। इस दौरान मैंने 1700 रुपये तनखा में कुरियर की नौकरी की। कम्पनी द्वारा पुलिस, पार्षद, श्रम विभाग क्लर्क और फिर मेरे वकील के जरिये समझौते के लिये दबाव डाला। पिता जी की सूझ- बूझ और संघर्षशीलता से एक लाख रुपये क्षतिपूर्ति का समझौता हुआ।

साँय 5 बजे चाय बनाता हूँ। हाथ में कोई पुस्तिका रहती है पर रात 9 बजे तक मुख्यतः ग्राहकों को निपटाता हूँ । रात 9 बजे भोजन बनाना/गर्म करना। शटर 10½ बजे गिराना।

बाँये हाथ से बहुत कष्ट से लिखना सीखा। अखबार- पत्रिका पढने का शौक बढा। सन् 2003 में 12 वीं के ओपन बोर्ड के फार्म भरे। परीक्षा में उत्तीर्ण।

कुरियर की नौकरी छोड़ कर क्षतिपूर्ति के पैसों से पब्लिक फोन लगाया। पिता जी की नौकरी छूट गई तो उनके लिये भी ऐसा फोन लगाया। झुग्गियों में भी शीघ्र ही फोन की ढेरों दुकानें खुल गई और सिर्फ फोन से गुजारा नहीं वाली स्थिति बनी।

किराया देते रहने की बजाय एक झुग्गी खरीदी। फोन के संग किराने की दुकान भी की। दिल्ली विश्वविद्यालय से दूरस्थ शिक्षा से बी.ए.

साथियों के विवाह हो गये हैं। माँ शादी के लिये जोर दे रही है। पिता जी एक हद तक मेरी बात समझते हैं.... आधार प्रेम होना चाहिये पर आज यह नजर ही नहीं आता और मजबूरी, लालच, जबरदस्ती वाली बात रहती हैं। साथी की इच्छा है। क्या करें ?

दुकानदार और ग्राहक का रिश्ता अखरता है। मुहल्ले वालों से एक अजीब सम्बन्ध बनता है। चार- आठ आने के लिये एक- दूसरे को बेईमान समझते हैं, एक- दूसरे को धोखा देते हैं।

कोई किताब पढते हुये अथवा टी वी देखते 11- 11½ बजे सो जाता हूँ। (जारी)

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी
फरीदाबाद—121001

टेकमसेह

टेकमसेह प्रोडक्ट्स मज़दूर : "38 किलो मीटर स्टोन मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में रेफ्रिजरेटर का मुख्य अंग कम्प्रेसर बनता है। इन 15 वर्ष के दौरान यह फैक्ट्री केल्विनेटर से व्हर्लपूल की राह टेकमसेह कम्पनी की बनी है तथा इस दौरान फैक्ट्री में कम्प्रेसरों का उत्पादन तीन वर्षीय मैनेजमेन्ट- यूनियन समझौतों द्वारा 2100 से बढा कर 6400 प्रतिदिन कर दिया गया है। और, छँटनी- दर- छँटनी द्वारा इस दौरान कम्प्रेसर बनाते स्थाई मजदूरों की सँख्या 2400 के करीब से घटा कर 610 कर दी गई है। उत्पादन में तीन गुणा वृद्धि और स्थाई मजदूरों की सँख्या को एक चौथाई करने के बाद कम्पनी कह रही है..... यूनियन नेताओं ने दिवाली से पहले गेट मीटिंग में कहा कि कम्पनी 40 करोड़ रुपये घाटे में है और सन् 2005 के बोनस के लिये मना कर रही है।

"इस समय मौजूद 610 स्थाई मजदूर 3500 कम्प्रेसर प्रतिदिन से ज्यादा बना ही नहीं सकते जबकि मैनेजमेन्ट- यूनियन समझौता 6400 कम्प्रेसर प्रतिदिन का है। ऐसे में 14- 15 हजार तनखा वाले स्थाई मजदूरों के संग ढाई हजार तनखा वाले कैजुअल वरकर की सँख्या 1000 तक हो जाती है। कम्पनी द्वारा फिर चर्चा कि घाटे से पार पाने के लिये 200 स्थाई मजदूरों तथा स्टाफ के 50 लोगों की छँटनी जरूरी है। नये मैनेजिंग डायरेक्टर ने खर्च में कटौती के लिये जनरल मैनेजर व अन्य अधिकारियों के दफ्तरों में लगे 80- 85 एसी के बिजली कनेक्शन कटवाये और सप्ताह बाद वे जोड़ दिये गये। स्टाफ वालों को बुला कर साहब लोग इस्तीफे की कह रहे हैं। छह महीने की अतिरिक्त तनखा के एवज में स्टाफ के दो नये लोगों ने इस्तीफे दे दिये हैं..... बातें हो रही हैं कि 50 हजार से अधिक वेतन वाले जी.एम., वाइस प्रेसीडेन्ट (मानव संसाधन), डिप्टी जी.एम. (परचेज) से इस्तीफे ले लिये गये हैं। मजदूरों पर दबाव बढाये जा रहे हैं.....

"महीने में 7- 10 दिन फैक्ट्री में उत्पादन बन्द करना। महीने में 16 दिन से कम दिन उत्पादन करवा कर पुराने मैनेजमेन्ट- यूनियन समझौते अनुसार दो महीने 300 रुपये तनखा में से काटे। फिर नये मैनेजमेन्ट- यूनियन समझौते अनुसार 6400 कम्प्रेसर प्रतिदिन की औसत से कम पर कम्पनी प्रतिमाह 1400 रुपये तनखा में से काट रही है। बोनस मना.... काम के बढते बोझ और छँटनी- दर- छँटनी की भय- चिन्ता के कारण थकावट, तनाव, अवसाद, हृदयरोग से ग्रस्त 14- 15 हजार रुपये तनखा लेते टेकमसेह के स्थाई मजदूरों में लीडरों के प्रति असन्तोष बढा। दिवाली से पहले गेट मीटिंग में यूनियन नेताओं ने कहा कि कम्पनी को उत्पादन चाहिये ही नहीं; अक्टूबर में कम्पनी का लक्ष्य ही 5000 कम्प्रेसर प्रतिदिन का था और उसी के अनुरूप सामग्री दी पर फिर भी 6400 के नाम पर पैसे काट लिये ... बोनस और कटे हुये 1400 रुपये के लिये लीडरों ने दिवाली पर मिठाई तथा उपहार नहीं लेने की घोषणा की। स्थाई मजदूरों ने यूनियन नेताओं के आदेश का पालन किया।"

आप-हम क्या-क्या करते हैं..... (पेज एक का शेष)

पर डण्डा। नाश्ते में भिगोये हुये चने अथवा दलिया। मुंडा सिर, चोटी, सिर्फ कुर्ता-पाजामा। कक्षा गर्मियों में सुबह 7 से और सर्दियों में 9 बजे से। पढाई में भी वही डण्डे का व्यवहार। भोजन में दाल-रोटी अथवा सब्जी-रोटी। तीन सौ बच्चों पर एक रसोइया था, बड़े लड़कों से सहायता लेता था। पुस्तकें हरियाणा शिक्षा बोर्ड की। स्कूल की छुट्टी के बाद और साँय 4 बजे की घण्टी के बीच घण्टा-दो घण्टा बच्चों को मिलते। कुछ गपशप, कुछ अपनी गेंद से खेलना — खेल के लिये गुरुकुल की तरफ से कुछ नहीं। साँय के व्यायाम की घण्टी — आसन, प्राणायाम, कसरत। स्नान और फिर साँय 7 बजे संध्या-हवन की घण्टी। आठ बजे बाद भोजन। सोने से पूर्व एकत्र हो कर 9½ बजे मंत्रोच्चार।

गुरुकुल का एक अजीब-सा माहौल था। कोई भी अध्यापक छात्रों से लगाव रखता नहीं दिखता था। सब बच्चे डरे-से रहते थे। माता-पिता से दूर हर समय परेशान-सा रहना।

मुझे गुरुकुल का जीवन और भी अधिक पीड़ादायक लगा। मैंने अपने को बहुत ज्यादा अकेला व असहाय महसूस किया। अनजान जगह और यह अहसास नहीं कि मैं कुछ कर सकता हूँ। ऐसे में तीसरी कक्षा में बुरी तरह पिसा। रविवार को पिता जी मिलने आते तो उनके सामने रोता।

बच्चे भाग जाते थे। माता-पिता पकड़ कर लाते। यह देख कर धीरे-धीरे मुझ में विद्रोह की भावना बढी। चौथी कक्षा में होने के बाद मैंने भी भागना शुरू किया। आठ-दस बार भागा और पिता जी फिर छोड़ जाते — वापसी पर पिटता था। पिता जी अनुशासन को अच्छा मानते थे। पिता जी को गुरुकुल ठीक लगता था पर पापा मुझे प्यार भी करते थे। मम्मी भी फरीदाबाद आ गई थी। पाँचवीं में पापा ने झुग्गियों में पहले वाले स्कूल में मुझे दाखिल करवाया।

दुकान पर कपड़े 3-4 दिन में धोता हूँ। नहाने, दाँत साफ करने में 10½ बज जाते हैं। नाश्ता तैयार करता हूँ, टी वी पर समाचार....

मैं परिवार में रहने लगा था पर सन्तुष्टि वाली बात नहीं रही। मम्मी-पापा में विवाद जारी थे। स्कूल में मन नहीं लगता था — हैडमास्टर सामान्य व्यवहार करने लगे थे और बाकी अध्यापक डण्डे से काम लेते थे। एक अजीब-सी, ऊटपटाँग-सी जिन्दगी चल रही थी। परिवार में गरीबी को, आर्थिक अभाव को समझने लगा था। कपड़ा खरीदते समय स्कूल की वर्दी ही, पुराने जूते ही, खेल का सामान नहीं खरीदना.... तमाम छोटी-छोटी इच्छायें आर्थिक अभावों की वजह से पूरी नहीं हुई। पिता जी दारू नहीं पीते थे, जुआ नहीं खेलते थे, तम्बाकू के सिवा कोई ऐब नहीं... पिता जी टूल रूम के कुशल कारीगर थे और कई वर्कशॉपों-फैक्ट्रियों में काम कर चुके थे। मैं पाँचवीं में था तब पापा ने रेहड़ी बन्द कर फिर नौकरी शुरू की। नौकरी-रेहड़ी-नौकरी तवे-चूल्हे-तवे जैसी थी। मुझे यह समझ में आने लगा था कि जिन्दगी ऐसी नहीं होनी चाहिये — जीवन में कुछ खुशनुमा होना चाहिये।

वर्कशॉप-फैक्ट्री

पाँचवीं की बोर्ड की परीक्षा के बाद 1½ महीने की छुट्टी और 15 दिन अपनी तरफ से करके मैंने 2 महीने लखानी जूतों के अपर बनाने वाली वर्कशॉप में काम किया। तनखा 400 रुपये महीना, पैदल संजय कॉलोनी जाता था। सिलाई ऑपरेटर के साथ काम करना — पीस पर रह जाते अतिरिक्त धागों को मैं काटता। काफी रफ्तार से काम करना पड़ता। कैंची चलाते-चलाते हाथ दर्द करने लगते। बुरा लगता जब छोटी-मोटी गलती पर अथवा सुस्त होने पर ऑपरेटर डाँट देता। हम 5-7 बच्चे, 10-12 आदमी और 10 औरतें सुबह 8½ से 5 बजे तक काम करते थे।

पहली व दूसरी तनखा से परिवार के सब सदस्यों के लिये कपड़े बनवा कर मैंने अपनी हार्दिक इच्छा की पूर्ति की।

छठी की परीक्षा के बाद फिर दो महीने काम किया। ज्यादा तनखा के लिये जगह ढूँढी। खेमका कन्टेनर फैक्ट्री में ठेकेदार ने कम आयु के कारण नहीं रखा। संजय कॉलोनी में इलेक्ट्रोप्लेटिंग की एक वर्कशॉप में रात 9 बजे से सुबह 9 बजे तक काम मिला। रात को जागना, एक नशे-से में काम करना, अजीब-सी बिखरी-बिखरी चीजें, हाथ-पैर का अजीब रंग के होना, साँस लेने में दिक्कत..... पहले दिन ही अच्छा नहीं लगा पर 4-5 दिन इसलिये किया कि अन्यथा पैसे नहीं मिलेंगे।

— सैक्टर-24 में ओरफिक डाइंग फैक्ट्री में धुलाई ठेकेदार के जरिये लगा। छपाई वाली जगह से ट्राली में माल भर कर लाना, होदी में खड़े हो कर साबुन के पानी, गर्म पानी, ठण्डा पानी में रगड़ कर धोना। सुखाने की बड़ी मशीन में डालना। फिर दूसरे विभाग में पहुँचाना। सुबह 8 से रात 8 बजे तक। पानी में खड़े रहना, कपड़े भीगे रहते — गर्मी थी फिर भी अच्छा नहीं लगा। चार दिन बाद छोड़ दिया।

— कार्डपैक फैक्ट्री, प्लॉट 323 सैक्टर-24 में ठेकेदार के जरिये रखा गया। तनखा 800 रुपये। प्रतिदिन 12 घण्टे, तीसों दिन — ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। शिफ्ट एक थी पर हफ्ते में एक-आध दिन रोटी के 10 रुपये दे कर रात 10 से 2-3-4 बजे तक, गाड़ी का माल पूरा हो जाने तक रोक लेते। दो बच्चों और 4 महिलाओं समेत 32 मजदूर थे। ई.एस.आई. व पी.एफ. किसी की नहीं। स्थाई कोई नहीं। तनखा देरी से — 17 तारीख बाद। जोड़ीदार के साथ सिर पर बोझ ढोना पड़ता, बीच-बीच में फोल्डिंग का काम मिलता तब कुछ राहत रहती। काम का बोझ ज्यादा था पर 800 रुपये का आकर्षण था, जोड़ीदार के साथ गपशप भी आकर्षण था। डेढ महीने लगातार काम किया।

सातवीं कक्षा की छुट्टियों में भी कार्डपैक फैक्ट्री में ठेकेदार के जरिये रखा गया। इस बीच क्रिकेट का ज्यादा ही शौकीन हो गया था — दो महीने की तनखा **(बाकी पेज तीन पर)**

दिल्ली से-

अब दिल्ली में 8 घण्टे की ड्युटी और हफ्ते में एक छुट्टी पर कम से कम तनखा हैल्पर की 3312 रुपये (8 घण्टे के 127 रुपये 40 पैसे) है।

राजमा ताज एक्सपोर्ट मजदूर : "ए-257 ओखला फेज 1 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2000 रुपये है। फैक्ट्री में रोज 4 घण्टे ओवर टाइम काम होता है और उसका भुगतान सिंगल रेट से। सिलाई कारीगरों को पीस रेट से पैसे देते हैं। तनखा हर महीने देरी से — अक्टूबर का वेतन 30 नवम्बर तक नहीं।"

परफैक्ट इम्ब्राइड्री वरकर : "बी-140 ओखला फेज 1 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। हैल्परों को 12 घन्टे रोज पर महीने के 1800 रुपये और कारीगरों को 3000-3800 रुपये। फैक्ट्री में 40 मजदूर काम करते हैं पर ई.एस.आई. व पी.एफ. किसी की नहीं। मैनेजर बात-बात पर गाली देता है।"

किरण उद्योग मजदूर : "बी-82 ओखला फेज 1 स्थित फैक्ट्री में 4 ठेकेदारों के जरिये रखे 80 वरकरों में हैल्परों की तनखा 1800 रुपये और ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं। कारीगरों का वेतन 3000-5000 रुपये। फैक्ट्री में हीरो होण्डा मोटरसाइकिल के पुर्जे बनते हैं और माँग अरजेन्ट होती है तब लगातार 36 घण्टे भी रोक लेते हैं।"

आनन्द इन्टरनेशनल वरकर : "सी-113 ओखला फेज 1 स्थित फैक्ट्री में सिलाई कारीगरों को 16½ रुपये प्रति घण्टा के बताते हैं परन्तु उत्पादन की मात्रा अधिक निर्धारित कर और माइनस-प्लस के पचड़े में ऐसा फँसाते हैं कि कारीगर के 10 रुपये प्रति घण्टा ही पड़ते हैं। रोज 12 घण्टे काम न करें तो गुजारा नहीं हो। अरजेन्ट माल की माँग होती है तब कम्पनी नाइट लगवाती है, हम लगातार 16 घण्टे काम करते हैं। काम नहीं होता तब कम्पनी छुट्टी कर देती है और छुट्टी वाले दिन का एक पैसा भी हमें नहीं देती। हैल्परों को 12 घण्टे प्रतिदिन पर महीने के कम्पनी 3271 रुपये देती है। फैक्ट्री में पीने का पानी गन्दा आता है और पेशाब करने के लिये जगह ढूँढनी पड़ती है। फैक्ट्री में काम करते 200 मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

ढाबा कारीगर : "मैं 25 साल का हो गया हूँ और जब से होश सम्भाला है तब से खरीदने-बेचने व मजदूरी से वास्ता पाया है। परिवार में कलह के कारण पूर्वी उत्तर प्रदेश से दिल्ली आया। यहाँ ओखला औद्योगिक क्षेत्र में मैंने रेहड़ी पर मूँगफली बेची, आम बेचे, लस्सी बेची। फिर खोखे में पान की दुकान की। एक प्लॉट लेने में दुकान बेची और नौकरी करने लगा। सन्तनगर में साल-भर रईसों के लिये चलते-फिरते टॉयलेट का प्रबन्ध करती कम्पनी में काम किया। फिर ओखला में एक ढाबे पर ढाई साल नौकरी की। अपने खुद के ढाबे के चक्कर में रेहड़ी पर ढाबा शुरू किया पर साल-भर में ही कान पकड़ लिये। अब ढाबों पर नौकरी करता हूँ। कारीगर हूँ, महीने के 3600 रुपये लेता हूँ पर ढाबे पर रोज सुबह 7 से रात 11 बजे तक काम रहता है।"

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।
RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73